

મ-દની વૈનલ  
દેખતે રળિયે



GUSL KA TARIQA (GUJARATI)



સુલતન મુહમ્મદ

(હ-નફી)

# ગુસ્લ કા તરીકા



- મર્દ વ ઓરત દોનો કે વિયે ગુસ્લ કી 21 એહતિયાતો 5
- નાપકી કી હાલત મેં કુરઆને પાક પઢને વા છુને કે 10 મસાઈલ 15
- ગુસ્લ ફર્જ હોને કે 5 અસ્ખાબ 7
- બચ્યા કબ બાલિગ હોતા હે ? 18
- કબ કબ ગુસ્લ કરના સુન્નત હે 12
- તયમ્મુમ કા તરીકા 21
- તંગ લિખાસ વાલે કી તરફ નઝર કરના કેરા ? 14
- તયમ્મુમ કે 25 મ-દની ફૂલ 22

مكتبة المدينة  
(مطبعة اسلامی)

શીખે તરીકત.અમીરે અહલે સુન્નત બ્રાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી દુઆરત અલલામા મીલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્લાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## કિતાબ પઢને ઠી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈબ્બાસ અવાર કાદિરી ૨-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા.

દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા: ઐ અલ્લાહ અમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઐર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઐર બુલુર્ગા વાલે.

(المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર ઐક ઐક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબ ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મગિરત



13, શવ્વાલુલ મુકર્રમ સિ. 1428 હિ.

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## “ગુસ્ત ઠા વરીઠા”

યેહ રિસાલા (ગુસ્ત ઠા વરીઠા)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ને ઉદ્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મકતૂબ યા ઈ-મેઈલ ) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. : 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## गुस्ल का तरीका (उ-नई)

येह रिसाला (26 सफ़हात) मुकम्मल पढ लीजिये, कवी  
धम्कान है के कछ ग-लतियां आप के सामने आ जाअें.

### दुइए शरीफ़ की इमीलत

सरकारे मदीना, सुल्ताने भा करीना, करारे कल्भो सीना,  
कैज गन्जना, साहिबे मुअत्तर पसीना वल्लै काले वल्लै वल्लै  
रहमत बुन्याद है : मुज पर दुइए पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे  
लिये तदारत है. (مُسْنَدُ أَبِي يَعْقُبَ ج ٥ ص ٤٠٨ حَدِيث ٦٣٨٣)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

### अनोषी सजा

उजरते सय्यिहुना जुनैदे भगदादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इरमाते हैं :  
धुनुल कुरैभी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي कलते हैं : अक बार मुजे अलतिला म लो  
गया. मैं ने धरादा किया धसी वक्त गुस्ल कर लूं. यूंके सप्त सई की  
रात थी नइस ने सुस्ती की और भश्वरा दिया : “अभी काई रात  
बाकी है धतनी जल्दी भी क्या है ! सुभ्र धत्मीनान से गुस्ल कर  
लेना.” मैं ने झैरन नइस को अनोषी सजा देने के लिये कसम भाई के  
धसी वक्त कपडों समेत नहाउंगी और नहाने के बा’द कपडे नियोडूंगा

इस मामले में मुस्ताहा (عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) उस (عَزَّ وَجَلَّ) पर दस रइमतें भेजता है. (सु.)

भी नहीं और उन को अपने बदन ही पर पुरुश करेगा. युनान्थे में ने ऐसा ही किया, वाकेई जो अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) के काम में ढील करे ऐसे सरकश नईस की येही सजा है. (किमियात सैदात २ ज १९२)

अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) की उन पर रइमत हो और उन के सटके उमारी मगिरेत हो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

निहंग' व अज्दहा मारा अगर्थे शेरे नर मारा

बडे मूजी को मारा नईसे अम्भारा को गर मारा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो ! देभा आप ने ! उमारे अस्लाई

किराम (رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام) अपने नईस की यालों को नाकाम बनाने के लिये कैसी कैसी मशकतें जेवते थे. ईस से वोह ईस्लामी लाई दर्स हासिल करें जो रात को अहतिलाम हो जाने की सूरेत में आभिरत की भौईनाक शर्म को लुला कर मइज घर वालों से शरमा कर या गुस्ल के मुआ-मले में सुस्ती कर के, नमाजे इज की जमाअत जाअेअ बटके (عَزَّ وَجَلَّ) नमाज तक कजा कर डालते हैं ! जब कभी गुस्ल ईर्ज हो जाअे तो नमाज का वक्त आ जाने पर इौरन गुस्ल कर लेना चाहिये. हदीसे पाक में आता है : किरिशते उस घर में द्वाभिल नहीं होते जिस में तस्वीर और कुत्ता और जुनुब (या'नी जिस पर जिमाअ या अहतिलाम या शइवत के साथ मनी पारिज होने की वजह से गुस्ल ईर्ज हो गया) हो.

(अबुदाउद ज १ व १०९ हदीथ २२७)

**इरमाओ गुस्लका** : عسى الله تعالى غيبو و الله وسلم : श्री शम्स मुज पर दुइद पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ग्रान)

## गुस्ल का तरीका (उ-नई)

बिगैर ज्बान हिलाओ दिल् में ँस तरह निख्यत कीजिये के में पाकी हासिल करने के लिये गुस्ल करता हूं. पहले दोनों<sup>2</sup> हाथ पहुंयों तक तीन<sup>3</sup> तीन<sup>3</sup> बार धोईये, फिर ँस्तिन्जे की जगह धोईये ज्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज का सा वुजू कीजिये मगर पाँउं न धोईये, हां अगर यौकी वगैरा पर गुस्ल कर रहे हैं तो पाँउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की तरह पानी युपउ लीजिये, फुसूसन सर्दियों में (ँस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन<sup>3</sup> बार सीधे कन्धे पर पानी बहाईये, फिर तीन<sup>3</sup> बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन<sup>3</sup> बार, फिर गुस्ल की जगह से अलग हो जाईये, अगर वुजू करने में पाँउं नहीं धोओ थे तो अब धो लीजिये. नहाने में किप्ला रुख न हों, तमाम बदन पर हाथ फैंर कर मल कर नहाईये. औसी जगह नहाना याहिये जहां किसी की नजर न पडे अगर येह मुफ्किन न हो तो मर्द अपना सित्र (नाफ़ से ले कर दोनों<sup>2</sup> घुटनों समेत) किसी मोटे कपडे से छुपा ले, मोटा कपडा न हो तो हस्बे जरूरत दो<sup>2</sup> या तीन<sup>3</sup> कपडे लपेट ले क्यूंके बारीक कपडा होगी तो पानी से बदन पर थिपक जाओगा और عَلَىٰ اللَّهِ تَوَكَّلْ घुटनों या रानों वगैरा की रंगत जाहिर होगी. औरत को तो और भी जियादा अहतियात की हाजत है. दौराने गुस्ल किसी किस्म की गुफ्त-गू मत कीजिये, कोई दुआ भी न पढिये, नहाने के बा'द तोलिये वगैरा से बदन पूंछने में हरज नहीं. नहाने के बा'द फौरन कपडे पहन लीजिये. अगर मकड़ल वक्त न हो तो दो<sup>2</sup> रक्कत नफ़ल अदा करना मुस्तहब है. (माभूज अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 319 वगैरा عالمگیری ج ۱ ص ۳۱۹)

**इस्मा'ले गुस्लहा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غُضُوهُ وَرَسْمُهُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुददे पाक न पढा तहकीक वोह बढ भप्त हो गया. (हदीस)

## गुस्ल के तीन<sup>3</sup> इरा'दम

﴿1﴾ कुल्ली करना ﴿2﴾ नाक में पानी यढाना ﴿3﴾ तमाम ज़ाहिर  
बदन पर पानी बढाना. (फ़तावु'ए'लमगीरु' ज 1, व 13)

### ﴿1﴾ कुल्ली करना

मुंह में थोडा सा पानी ले कर पय कर के डाल देने का नाम कुल्ली नही बल्के मुंह के हर पुर्जे, गोशे, छोट से छल्क की जउ तक हर जगह पानी बह जाये. ईसी तरह दाढों के पीछे गालों की तह में, दांतों की फ़िडकियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्के छल्क के कनारे तक पानी बहो. रोज़ा न हो तो गरगरा ली कर लीजिये के सुन्नत है. दांतों में छालिया के दाने या ओटी के रेशे वगैरा हों तो उन को छुडाना जरूरी है. हां अगर छुडाने में जरर (या'नी नुकसान) का अन्देशा हो तो मुआज़ है, गुस्ल से कब्ल दांतों में रेशे वगैरा महसूस न हुअे और रह गअे नमाज़ ली पढ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुडा कर पानी बढाना इर्ज़ है, पहले ज़े नमाज़ पढी थी वोह हो गई. ज़े हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पड़ोयता हो तो मुआज़ है. (बहारे शरीअत, ज़ि. 1, स. 316, इतावा 2-जविय्या मुअर्रज़, ज़ि. 1, स. 439, 440) जिस तरह की ओक कुल्ली गुस्ल के लिये इर्ज़ है ईसी तरह की तीन<sup>3</sup> कुल्लियां वुजू के लिये सुन्नत हैं.

### ﴿2﴾ नाक में पानी यढाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नही

**इरमाने गुस्लका** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शकाअत मिलेगी. (अहमद)

यलेगा बल्के जहां तक नर्म जगह है या'नी सप्त हड्डी के शुद्ध तक धुलना लाजिमी है. और येह यूं हो सकेगा के पानी को सूंघ कर उपर भीयिये. येह भयाल रभिये के बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाअे वरना गुस्ल न होग. नाक के अन्दर अगर रीठ सूंघ गई है तो उस का छुडाना इर्ज है, नीज नाक के बालों का धोना भी इर्ज है.

(औजान, औजान, स. 442, 443)

### ﴿3﴾ तमाम आहिरी अदन पर पानी अहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज और हर हर रोंगटे पर पानी अह जाना जरूरी है, जिस्म की आ'ज जगहें ऐसी हैं के अगर अहतियात न की तो वोह सूंभी रह जाअेंगी और गुस्ल न होग. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 317)

### “صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ” के धकडीस हुइइ की निश्अत से मई व औरत दोनों<sup>2</sup> के लिये गुस्ल की 21 अहतियातें

\* अगर मई के सर के बाल गुंधे हुअे हों तो उनहें षोल कर जउ से नोक तक पानी अहाना इर्ज है और \* औरत पर सिई जउ तर कर लेना जरूरी है षोलना जरूरी नहीं. हां अगर योटी अतनी सप्त गुंधी हुई हो के बे षोले जउं तर न होंगी तो षोलना जरूरी है \* अगर कानों में आली या नाक में नथ का छेद (सूराष) हो और वोह अन्द न हो तो उस में पानी अहाना इर्ज है. वुजू में सिई नाक के नथ के छेद में और गुस्ल में अगर कान और नाक दोनों में छेद हों तो दोनों में पानी अहाअें \* भंवों, मूंछों और दाढी के हर बाल का जउ



**इस्मा'ले मुस्लहा** : على الله تعالى عليه وعلى آله وسلم : जिस के पास मेरा जिंक हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीक न पढा उस ने जका की. (عمران)

से नोक तक और ँन के नीचे की ખाल का धोना जरूरी है \* कान का हर पुर्जा और ँस के सूराम का मुंह धोएं \* कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाएं \* ठोड़ी और गले का जोड, के मुंह उठाये बिगैर न धुलेगा \* हाथों को अच्छी तरह उठा कर बगलें धोएं \* बाजू का हर पडलू धोएं \* पीठ का हर जर्रा धोएं \* पेट की बट्टें उठा कर धोएं \* नाइ में ल्मी पानी डालें अगर पानी बहने में शक हो तो नाइ में उंगली डाल कर धोएं \* जिस्म का हर रोंगटा जड से नोक तक धोएं \* रान और पेडू (नाइ से नीचे के हिस्से) का जोड धोएं \* जब बैठ कर नहायें तो रान और पिंडली के जोड पर ल्मी पानी बहाना याद रखें \* दोनों सुरीन के मिलने की जगह का ખयाल रखें, ખुसूसन जब ખडे हो कर नहायें \* रानों की गोलाई और \* पिंडलियों की करवटों पर पानी बहायें \* उकर व उन्स-ययैन (या'नी इंतों) की नियली सत्ह जोड तक और \* उन्स-ययैन के नीचे की जगह जड तक धोएं \* जिस का ખतना न हुआ, वोह अगर ખाल यढ सकती हो तो यढा कर धोये और ખाल के अन्दर पानी यढाये.

(मुलખ्मस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 317, 318)

## मस्तूरात के लिये 6 अहतियातें

《1》 ढलकी हुँ पिस्तान को उठा कर पानी बहायें 《2》 पिस्तान और पेट के जोड की लकीर धोयें 《3》 इर्जे खारिज (या'नी औरत की शर्मगाह के बाहर के हिस्से) का हर गोशा हर टुकडा उीपर नीचे ખूब अहतियात से धोयें 《4》 इर्जे दाखिल (या'नी शर्मगाह के अन्दरूनी

**इरमान मुस्लहा** صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : જા મુઝ પર રોઝ જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મે કયામત ક  
દિન ઉસ કી શફાઅત કરુંગા. (કૌબ્રાહ)

હિસ્સે) મેં ઉંગલી ડાલ કર ધોના ફર્ઝ નહીં **મુસ્તહબ** હૈ ﴿5﴾ અગર હૈઝ યા નિફાસ સે ફારિગ હો કર ગુસ્લ કરેં તો કિસી પુરાને કપડે સે ફર્જે દાખિલ કે અન્દર સે ખૂન કા અસર સાફ કર લેના **મુસ્તહબ** હૈ (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 318) ﴿6﴾ અગર નેલ પોલિશ નાખુનોં પર લગી હુઈ હૈ તો ઉસ કા ભી છુડાના ફર્ઝ હૈ વરના ગુસ્લ નહીં હોગા, હાં મેહંદી કે રંગ મેં હરજ નહીં.

### ઝખ્મ કી પટ્ટી

ઝખ્મ પર પટ્ટી વગૈરા બંધી હો ઓર ઉસે ખોલને મેં નુક્સાન યા હરજ હો તો પટ્ટી પર હી મસ્હ કર લેના કાફી હૈ નીઝ કિસી જગહ મરઝ યા દર્દ કી વજહ સે પાની બહાના નુક્સાન દેહ હો તો ઉસ પૂરે ઉઝ્વ પર મસ્હ કર લીજિયે. પટ્ટી ઝરૂરત સે ઝિયાદા જગહ કો ઘેરે હુએ નહીં હોની યાહિયે વરના મસ્હ કાફી ન હોગા. અગર ઝરૂરત સે ઝિયાદા જગહ ઘેરે બિગૈર પટ્ટી બાંધના મુમ્કિન ન હો મ-સલન બાઝૂ પર ઝખ્મ હૈ મગર પટ્ટી બાઝૂઓં કી ગોલાઈ મેં બાંધી હૈ જિસ કે સબબ બાઝૂ કા અચ્છા હિસ્સા ભી પટ્ટી કે અન્દર છુપા હુવા હૈ, તો અગર ખોલના મુમ્કિન હો તો ખોલ કર ઉસ હિસ્સે કો ધોના ફર્ઝ હૈ. અગર ના મુમ્કિન હૈ યા ખોલના તો મુમ્કિન હૈ મગર ફિર વૈસી ન બાંધ સકેગા ઓર યૂં ઝખ્મ વગૈરા કો નુક્સાન પહોંચને કા અન્દેશા હૈ તો સારી પટ્ટી પર મસ્હ કર લેના કાફી હૈ, બદન કા વોહ અચ્છા હિસ્સા ભી ધોને સે મુઆફ હો જાએગા. (એઝન, સ. 318)

### ગુસ્લ ફર્ઝ હોને કે 5 અરબાબ

﴿1﴾ મની કા અપની જગહ સે શહ્વત કે સાથ જુદા હો કર ઉઝ્વ સે નિકલના ﴿2﴾ એહતિલામ યા'ની સોતે મેં મની કા નિકલ જાના ﴿3﴾ શર્મગાહ મેં હશ્ફા (સુપારી) દાખિલ હો જાના ખ્વાહ શહ્વત હો યા

**इस्माने मुस्लहा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (इस्ति)।

न हो, धन्नाल हो या न हो, दोनों पर गुस्ल इर्ज है ﴿4﴾ हैज से फारिग होना ﴿5﴾ निःफास (या'नी बय्या जनने पर जो भून आता है उस) से फारिग होना. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 321 ता 324)

## निःफास की अइरी वआहत

अक्सर औरतों में येह मशहूर है के बय्या जनने के आ'द औरत यालीस<sup>40</sup> दिन तक लाजिमी तौर पर नापाक रहती है येह बात बिदकुल गलत है. निःफास की तइसील मुला-हजा हो. बय्या पैदा होने के आ'द जो भून आता है उस को निःफास कहते हैं इस की जियादा से जियादा मुद्दत यालीस<sup>40</sup> दिन है या'नी अगर यालीस<sup>40</sup> दिन के आ'द भी बन्द न हो तो मरज है. लिहाजा यालीस<sup>40</sup> दिन पूरे होते ही गुस्ल कर ले और यालीस<sup>40</sup> दिन से पहले बन्द हो जाअे ज्वाह बय्ये की विलादत के आ'द अेक मिनट ही में बन्द हो जाअे तो जिस वक्त भी बन्द हो गुस्ल कर ले और नमाज व रोजा शुरुअ हो गअे. अगर यालीस<sup>40</sup> दिन के अन्दर अन्दर दोबारा भून आ गया तो शुरुअे विलादत से अत्मे भून तक सभ दिन निःफास ही के शुमार होंगे. म-सलन विलादत के आ'द दो<sup>2</sup> मिनट तक भून आ कर बन्द हो गया और औरत गुस्ल कर के नमाज रोजा वगैरा करती रही, यालीस<sup>40</sup> दिन पूरे होने में इकत दो<sup>2</sup> मिनट बाकी थे के फिर भून आ गया तो सारा यिल्वा या'नी मुकम्मल यालीस<sup>40</sup> दिन निःफास के ठहरेंगे. जो भी नमाजें पढीं या रोजे रभे सभ बेकार गअे, यहां तक के अगर इस दौरान इर्ज व वाजिब नमाजें या रोजे कजा किये थे तो वोह भी फिर से अदा करे.

(मा'भूज अज इतावा र-जविय्या मुपर्रज, जि. 4, स. 354, 356)

इस्मा'ले मुस्लहा. صلى الله تعالى عليّ و آله وسلم : तुम ज'हा भी हो मुज पर दुरद पढो क तुम्हारा दुरद मुज तक पडोयता है. (طبرانی)

## 5 अउरी अहकाम

﴿1﴾ मनी शह्वत के साथ अपनी जगह से जुदा न हुँई बढे भोज उठाने या बुलन्दी से गिरने या कुजला पारिज करने के लिये जोर लगाने की सूरत में पारिज हुँई तो गुस्ल इर्ज नहीं. वुजू बहर हाल टूट जायेगा ﴿2﴾ अगर मनी पतली पड गई और पेशाब के वक्त या वैसे ही बिला शह्वत ईस के कतरे निकल आये गुस्ल इर्ज न हुवा वुजू टूट जायेगा ﴿3﴾ अगर अहतिवाम होना याद है मगर उस का कोई असर कपडे वगैरा पर नहीं तो गुस्ल इर्ज नहीं ﴿4﴾ नमाज में शह्वत थी और मनी उतरती हुँई मा'लूम हुँई मगर बाहर निकलने से कब्ल ही नमाज पूरी कर ली अब पारिज हुँई तो नमाज हो गई मगर अब गुस्ल इर्ज हो गया. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 321 ता 322) ﴿5﴾ अपने हाथों से मादा पारिज करने से गुस्ल इर्ज हो जाता है. येह गुनाह का काम है. हदीसे पाक में औसा करने वाले को मलूिन कहा गया है. (आली ابن بشران ج 2 ص 50 رقم 477؛ حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح 96). औसा करने से मर्दाना कमजोरी पैदा होती है और बारहा देखा गया है के बिल आपिर आदमी शादी के लाईक नहीं रहता.

## मुश्त जनी का अभाव

मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रजा पान عليه رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की बिदमत में अर्ज किया गया : ओक शप्स मजलूक (या'नी मुश्त जनी करने वाला) है वोह ईस इ'ल से नहीं मानता है, हर यन्द उस को समजाया है, आप तहरीर इस्मा'ले, ईस का क्या हशर होगा और उस को क्या हुआ

**इरमाते गुस्ल** عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुझे पर इस भरतबा दुर्दे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ (उस पर सो रहमते नाजिल इरमाता है. (अ. 1))

पढना याहिये जिस से उस की आदत छूट जाये ?

ईशादि आ'ला उजरत : वोह गुनहगार है<sup>1</sup>, आसी है, ईस्सर के सबभ मुर-तकिबे कबीरा है, इंसिक है, उशर में औसों की (या'नी मुश्त जनी करने वालों की) उथेलियां गात्मन (या'नी हामिला) उठेंगी जिस से मजमअे आ'जम में उन की रुस्वाई होगी अगर तौबा न करें, और अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुआफ़ इरमाता है जिसे याहे और अजाब इरमाता है जिसे याहे. उसे याहिये की लाडौल शरीफ़ की कसरत करे और जब शैतान इस उ-र-कत की तरफ़ बुलाये तो झौरन हिल से मु-तवज्जेह उ भुदा عَزَّ وَجَلَّ हो कर लाडौल पढे. नमाजे पन्जगाना की पाबन्दी करे. नमाजे सुब्ह के आ'द बिला नागा सू-रतुल ईप्लास शरीफ़ का विर्द रभे. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ (इतावा र-अविय्या, जि. 22, स. 244) (श-ज-रअे अत्तारिय्या सफ़हा 16 पर है : हर सुब्ह सू-रतुल ईप्लास ग्यारह बार पढे अगर शैतान मअ लशकर के कोशिश करे के इस से गुनाह कराये न करा सके जब तक के येह भुद न करे)

## बहते पानी में गुस्ल का तरीका

अगर बहते पानी म-सलन दरिया, या नहर में नहाया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन<sup>3</sup> बार धोने, तरतीब और वुजू येह सब सुन्नते अदा हो गई. इस की भी उजरत नहीं के आ'जा को तीन<sup>3</sup> बार उ-र-कत दे. अगर तालाब वगैरा ठहरे पानी में नहाया

\_\_\_\_\_

1 : जबक के होशरुबा नुक्सानात की तफ़सीली मा'लूमत के लिये सगे मदीना عَنْهُ का रिसाला "अम्रद पसन्दी की तबाह कारियां" पढ लीजिये.

**इस्मा'ले गुस्लहा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुःख शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (अब्दुल्लाह)

तो आ'जा को तीन<sup>3</sup> बार ह-र-कत देने या जगह बदलने से तस्वीस या'नी तीन<sup>3</sup> बार धोने की सुन्नत अदा हो जायेगी. बरसात में (या नल या इव्वारे के नीचे) भडा होना बहते पानी में भडे होने के हुकम में है. बहते पानी में पुजू किया तो वोही थोडी देर उस में उजूव को रहने देना और ठहरे पानी में ह-र-कत देना तीन<sup>3</sup> बार धोने के का'म मकाम है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 320) पुजू और गुस्ल की धन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी बढाना होगा.

### इव्वारा जारी पानी के हुकम में है

इतावा अहले सुन्नत (गैर मत्बूआ) में है : इव्वारे (या नल) के नीचे गुस्ल करना जारी पानी में गुस्ल करने के हुकम में है लिहाजा धस के नीचे गुस्ल करते हुअे पुजू और गुस्ल करते वक्त की मुद्त तक ठहरा तो तस्वीस की सुन्नत अदा हो जायेगी. युनान्चे "दुर्रे मुफ्तार" में है : अगर जारी पानी या भडे डौज या बारिश में पुजू और गुस्ल करने के वक्त की मुद्त तक ठहरा तो उस ने पूरी सुन्नत अदा की. (दुर्रे मुफ्तार ج 1 ص 32) याद रहे ! गुस्ल या पुजू में कुल्ली करना और नाक में पानी बढाना है.

### इव्वारे की अहतियातें

अगर आप के हम्माम में इव्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी तरह देख लीजिये के उस की तरफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ किब्ले शरीफ़ की तरफ़ तो नहीं हो रही. धस्तिन्जापाने

**इरमाने मुस्ताहा** على الله تعالى غلبوا لله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो  
और वोह मुज पर दुरुदे पाक न पढे. (१६)

में भी इसी तरह अहतियात इरमाईये डिब्ले की तरफ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है के 45 द-रजे के आविये के अन्दर अन्दर हो. लिहाजा येह अहतियात भी जरूरी है के 45 डिग्री के आविये (अंगल ANGLE) के बाहर हो. इस मस्अले से अक्सर लोग ना वाकिफ हैं.

### W.C. का रूप दुरस्त कीजिये

मेहरबानी इरमा कर अपने घर वगैरा के उब्लयू.सी (W.C.) और इव्वारे का रूप अगर गलत हो तो उस की इस्लाह इरमा लीजिये जियादा अहतियात इस में है के W.C. डिब्ले से 90 के द-रजे पर या'नी नमाज पढने में सलाम कैरने के रूप कर दीजिये. मे'मार उभूमन ता'मीराती सडूलत और ખૂબ सूरती का लिहाज करते हैं आदाबे डिब्ला की परवाह नहीं करते. मुसल्मानों को मकान की गैर वाजिबी बेहतरी के बजाअे आपिरत की लकीकी बेहतरी पर नजर रખनी चाडिये.

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आपिरत बना ले

भाई नहीं भरोसा है कोई जिन्दगी का

### कल कल गुरल करना सुन्नत है

जुमुआ, इदुल फ़ित्र, अकर इद, अ-रफ़े के दिन (या'नी 9 जुल डिज्जतिल हराम) और अहराम बांधते वक्त नहाना सुन्नत है.

(فتاوى عالمگیری ج 1 ص 16)

### कल कल गुरल करना मुस्ताहल है

﴿1﴾ वुकूफ़े अ-रफ़ात ﴿2﴾ वुकूफ़े मुज्दलिफ़ा ﴿3﴾ हाजिरिये

**इस्मा'ले गुस्लका** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरेद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

४रम ﴿4﴾ हाज़िरिये सरकारे आ'उम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴿5﴾ तवाफ़  
 ﴿6﴾ द्रुभूले मिना ﴿7﴾ जमरों पर कंकरियां मारने के लिये तीनों<sup>3</sup> दिन  
 ﴿8﴾ शबे बराअत ﴿9﴾ शबे कद्र ﴿10﴾ अ-रफ़े की रात ﴿11﴾ मजल्लिसे  
 भीलाह शरीफ़ ﴿12﴾ हीगर मजल्लिसे भैर के लिये ﴿13﴾ मुर्दा नहलाने  
 के बा'द ﴿14﴾ मजनुन (या'नी पागल) को जुनुन (पागल पन) जाने  
 के बा'द ﴿15﴾ गशी से धँकाके के बा'द ﴿16﴾ नशा जाते रहने के  
 बा'द ﴿17﴾ गुनाह से तौबा करने ﴿18﴾ नअे कपडे पहनने के लिये  
 ﴿19﴾ सफ़र से आने वाले के लिये ﴿20﴾ धस्तिहाज़ा का पून बन्द  
 होने के बा'द ﴿21﴾ नमाजे कुसूफ़ व फ़ुसूफ़ ﴿22﴾ नमाजे धस्तिस्का के  
 लिये ﴿23﴾ भौफ़ व तारीकी और सप्त आंधी के लिये ﴿24﴾ बदन  
 पर नज़सत लगी और येह मा'लूम न हुवा के किस जगह लगी है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 324, 325, ३६३-३६१) (ص 1) مُخْتَارُ وَرَدُ الْمُخْتَارِ ج

## अेक गुस्ल में मुप्तलिफ़ निख्यतें

जिस पर यन्द गुस्ल हों सब की निख्यत से अेक गुस्ल कर लिया, सब अदा हो गअे सब का सवाब मिलेगा. जुनुब ने जुमुआ या धद के दिन गुस्ले जनाबत किया और जुमुआ और धद वगैरा की निख्यत भी कर ली सब अदा हो गअे, अगर उसी गुस्ल से जुमुआ और धद की नमाज़ अदा कर ले.

(मापूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 325)

## भारिश में गुस्ल

लोगों के सामने सित्र फोल कर नहाना हराम है. (इतावा र-जविख्या मुभर्रज़ा, जि. 3, स. 306) भारिश वगैरा में भी नहाअें तो



इस्लाम में गुस्ल का अर्थ है : मुझ पर दुरुह शरीक पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अनुर)

पाजमा या शलवार के ठीपर मजीद रंगीन मोटी यादर लपेट लीजिये ताके पाजमा पानी से थिपक भी जाये तो रानों वगैरा की रंगत जाहिर न हो.

### तंग लिबास वाले की तरफ नजर करना कैसा ?

लिबास तंग हो या जोर से हवा चली या बारिश या साहिले समुन्दर या नहर वगैरा में अगर्चे मोटे कपडे में नहाये और कपडा इस तरह थिपक जाये के सित्र के किसी कामिल उज्व म-सलन रान की मुकम्मल गोलाई की हैअत (उत्मार) जाहिर हो जाये ऐसी सूरत में उस (मप्सूस) उज्व की तरफ दूसरे को नजर करने की इजाजत नहीं. येही हुकम तंग लिबास वाले के सित्र के उतरे हुये उज्वे कामिल की तरफ नजर करने का है.

### नंगे नहाते वक्त पूज अहतियात

हम्माम में तन्हा नंगे नहाये या ऐसा पाजमा पहन कर नहाये के उस के थिपक जाने से रानों वगैरा की रंगत जाहिर हो सकती है तो ऐसी सूरत में डिब्बे की तरफ मुंह या पीठ मत कीजिये.

### गुस्ल से नज्ला बढ जाता हो तो ?

जुकाम या आशोबे यश्म वगैरा हो और येह गुमाने सहीह हो के सर से नहाने में मरज बढ जायेगा या दीगर अमराज पैदा हो जायेगे तो कुल्ली कीजिये, नाक में पानी चढाईये और गरदन से नहाईये. और सर के हर डिस्से पर लीगा हुवा हाथ फेर लीजिये गुस्ल हो जायेगा. बा'दे सिद्धत सर धो उलिये पूरा गुस्ल नये

**इस्माने मुस्लहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से हुइके पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर हुइके पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिरेत है. (मुम्बा)

सिरे से करना जरूरी नहीं. (भाभूज अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 318)

## बाट्टी से गहाते वकत अहतियात

अगर बाट्टी के जरीअे गुस्ल करें तो अहतियातन उसे तिपाई (STOOL) वगैरा पर रख लीजिये ताके बाट्टी में छिटें न आअें. नीज गुस्ल में 'इस्ति'माल करने का मग ली इर्श पर न रभिये.

## बाल की गिरेह

बाल में गिरेह पड जाअे तो गुस्ल में उसे ञोल कर पानी बलाना जरूरी नहीं. (अैजन)

**“कुरआन मुहदस है” के दरा<sup>10</sup> हुइके की निर्यात से नापाकी की हालत में कुरआने पाक पढने या धूने के 10 मसाएल**

❖**1** जिस पर गुस्ल इर्ज हो उस को मस्जिद में जाना, तवाइ करना, कुरआने पाक धूना, बे धूअे जबानी पढना, किसी आयत का लिखना, आयत का ता'वीज लिखना (लिखना उस सूरत में हराम है जिस में कागज को धूना पाया जाअे, अगर कागज को न धूअे तो लिखना जाईज है) (गैर मत्बूआ इतावा अहले सुन्नत) अैसा ता'वीज धूना, अैसी अंगूठी धूना या पहनना जिस पर आयत या हुइके मुकतआत लिखे हों हराम है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 326) (मोमजाअे वाले या प्लास्टिक में लपेट कर कपडे या यमडे वगैरा में सिले हुअे ता'वीज को पहनने या धूने में मुजा-यका नहीं)

❖**2** अगर कुरआने पाक जुजदान में हो तो बे वुजू या बे गुस्ल जुजदान पर हाथ लगाने में हरज नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 326)

**कुरमाने मुस्ताहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुरुद शरीफ पढता है **अल्लाह** عزوجل उस के लिये अक कीरात अज लिफता है और कीरात उदुद पडाउ जितना है. (उज़्ज़र)

«3» ँसी तरल किसी ँसे कपडे या रुमाल वगैरा से कुरआने पाक पकडना ज़रुत है जो न अपने ताबेअ हो न कुरआने पाक के. (अैज़न)

«4» कुरते की आस्तीन, दूपट्टे के आंचल से यहाँ तक के यादर का अक कोना ँस के कन्धे पर है तो यादर के दूसरे कोने से कुरआने पाक को छूना हराम है के येह सब चीज़ें ँस (छूने वाले) के ताबेअ हैं.

(अैज़न)

«5» कुरआने पाक की आयत हुआ की निखत से या तभरुक के लिये म-सालन بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ या अदाअे शुक्र के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ या किसी मुसल्मान की मौत या किसी किस्म के नुकसान की ખबर पर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ या सना की निखत से पूरी सू-रतुल इतिहा या आ-यतुल कुर्सी या सू-रतुल उशर की आखिरी तीन आयात पढ़ें और ँन सब सूरतों में कुरआन पढने की निखत न हो तो कोर्द हरज नहीं.

(अैज़न)

«6» तीनों कुल बिला लइजे कुल ब निखते सना पढ सकते हैं. लइजे कुल के साथ सना की निखत से भी नहीं पढ सकते क्यूंके ँस सूरत में ँन का कुरआन होना मु-तअय्यन है, निखत को कुछ दखल नहीं.

(अैज़न)

«7» बे वुजू को कुरआन शरीफ या किसी आयत का छूना हराम है. बिगैर छूअे ज़बानी या दैख कर पढने में मुज़ा-यका नहीं .

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 326)

«8» जिस बरतन या कटोरे पर सूरल या आयते कुरआनी लिखी हो

**इस्लाम के गुस्ल का नाम** : على الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुद्ध पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उ. ५)

बे वुजू और बे गुस्ल को उस का धूना हराम है. (अैज़न, स. 327)

«9» ईस का ईस्ति'माल सब के लिये मक़रूह है. हां भास ब निर्य्यते शिफ़ा उस में पानी वगैरा डाल कर पीने में हरज नहीं.

«10» कुरआने पाक का तरजमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में हो उस को भी पढने या धूने में कुरआने पाक ही का सा हुक्म है.

(अैज़न)

## बे वुजू दीनी किताबें धूना

बे वुजू या वोह जिस पर गुस्ल इर्ज़ हो उन को फ़िक़ह, तफ़सीर व हदीस की किताबों का धूना मक़रूह है. और अगर इन को किसी कपडे से धुवा अगर्ये ईस को पढने या ओढे हुअे हो तो मुज़ा-यका नहीं. मगर आयते कुरआनी या उस के तरजमे पर इन किताबों में भी हाथ रभना हराम है. (अैज़न)

बे वुजू ईस्लामी किताबें पढने वाले बलके अज्जारात व रसाईल धूने वाले भी अेहतियात इस्लामी करे के उमूमन इन में आयात व तरजमे शामिल होते हैं.

## नापाकी की हालत में दुरुद्ध शरीफ़ पढना

जिन पर गुस्ल इर्ज़ हो उन को दुरुद्ध शरीफ़ और दुआओं पढने में हरज नहीं मगर बेहतर येह है के वुजू या कुल्ली कर के पढें.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 327) अज़ान का जवाब देना उन को ज़ाईद है.

(عالمگیری ج 1 ص 38)

## उंगली में सियाही (INK) की तह जमी हुई हो तो ?

पकाने वाले के नापुन में आटा, लिपने वाले के नापुन वगैरा

**इस्मा'ले मुस्लहा** عَسَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरेद पाक पढा **اَللّٰهُمَّ** اَعُوْذُ بِكَ  
पर दस रहमतें बेजता है. (مسلم)

पर सियाही (INK) का जिर्म, आम लोगों के लिये मक़्भी, मख़्दर की बीट लगी दुर्घ रह ग़र्ध और तवज्जोह न रही तो गुस्ल हो जायेगा. हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना जरूरी है पहले जो नमाज़ पढी वोह हो ग़र्ध. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 319)

## बय्या कब बालिग होता है ?

लडका बारह<sup>12</sup> साल और लडकी नव<sup>9</sup> बरस से कम उम्र तक हरगिज़ बालिग व बालिगा न होंगे और लडका लडकी दोनों (छिजरी सिन के अ'तिबार से) 15 बरस की कामिल उम्र में जरूर शरअन बालिग व बालिगा हैं, अगरये आसारे बुलूग (या'नी बालिग होने की अलामतें) जाहिर न हों. एन उम्रों के अन्दर अगर आसार पाये जायें, या'नी प्वाह लडके प्वाह लडकी को सोते प्वाह जागते में एन्जाल हो (या'नी मनी निकले)... या... लडकी को हैज़ आये... या... जिमाअ से लडका (किसी लडकी को) डामिला कर दे... या... (जिमाअ की वजह से) लडकी को डम्ब रह जाये तो यकीनन बालिग व बालिगा हैं. और अगर आसार न हों, मगर वोह जुद कहे के हम बालिग व बालिगा हैं और जाहिर डाल उन के कौल की तकज़ीब न करता (या'नी सुटलाता न) हो तो भी बालिग व बालिगा समजे जायेंगे और तमाम अडकाम बुलूग के निज़ाज़ पायेंगे और (लडके के) दाढी मूँछ निकलना या लडकी के पिस्तान (या'नी छाती) में उबार पैदा होना कुछ भो'तबर नहीं.

(इतावा र-अविय्या, जि. 19, स. 630)

## किताबें रपने की तरतीब

❦ 1 ❧ कुरआने पाक सब किताबों के उपर रभिये फिर तइसीर फिर

**इरमाने मुश्हाफ़ा** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शिप्स मुज़ पर दुर्इद पाक पढना भूल गया वोइ जन्त का रास्ता भूल गया. (طريق)

इदीस फिर फ़िक्र फिर दीगर इस्लामी किताबें.

(अडारे शरीअत, जि. 1, स. 327)

﴿2﴾ किताब पर कोई दूसरी चीज़ यहाँ तक के कलम भी मत रबिये बल्के जिस सन्दूक में किताब हो उस पर भी कोई चीज़ न रबिये.

(अैज़न, स. 328)

## अवराक में पुडिया बांधना

﴿1﴾ मसाईल या दीनियात के अवराक में पुडिया बांधना, जिस दस्तर ज्वान या बिछोने पर अशआर वगैरा कुछ तडरीर हो उन का इस्ति'माल मन्अ है.

(अडारे शरीअत, जि. 1, स. 328)

﴿2﴾ डर जभान के डुड़के तडज्ज का अदब करना याइये. (तइसीली मा'लूमात के लिये इैज़ाने सुन्नत के बाब "इैज़ाने बिस्मिल्लाह" सइहा 113 से सइहा 123 का मुता-लआ इरमा लीजिये)

﴿3﴾ मुसल्ले के कोने में उमूमन कम्पनी के नाम की चिट सिवाई की डुई होती है उस को निकाल दिया करें.

## मुसल्ले पर का'अतुल्लाह शरीफ़ की तस्वीर

अैसे मुसल्ले जिन पर का'अतुल्लाह शरीफ़ या गुम्बदे जजरा बना हुवा हो उन को नमाज़ में इस्ति'माल करने से मुकदस शबीह पर पाँउ या घुटना पडने का इम्कान रहता है लिहाज़ा नमाज़ में अैसे मुसल्ले का इस्ति'माल करना मुनासिब नहीं. (इतावा अडले सुन्नत)

## वस्वसों का अेक सलज

गुस्ल खाने में पेशाब करने से वस्वसे पैदा होते हैं. डजरते सख्खिदुना अब्दुल्लाह बिन मुग़इल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के

**इरमाने मुश्तका** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस क पास मेरा जिक्र हुवा और उस न मुज पर हुइए पाक न पढा तइकीक वोह बढे अफ्त हो गया. (उंन)

रसूले करीम, रउक़्क़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ने इस से मन्अ इरमाया के कोई शप्स गुस्ल जाने में पेशाब करे और इरमाया : भेशक उभूमन इस से वस्वसे पैदा होते हैं.

(سُنَنُ ابوداؤد ج ١ ص ٤٤ حديث ٢٧)

## बयम्मुम का बयाब

### तयम्मुम के इराधत

तयम्मुम में तीन<sup>3</sup> इर्ज हैं : **1** निय्यत **2** सारे मुंड पर हाथ इरेना **3** कोहनियों समेत दोनों<sup>2</sup> हाथों का मस्ह करना.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 353, 355)

## “बयम्मुम शीअ लो” के दस<sup>10</sup> हुइइ की गिस्लत से तयम्मुम की 10 सुब्बतें

**1** बिस्मिल्लाह शरीफ़ कहनना **2** हाथों को जमीन पर मारना **3** जमीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढाना और पीछे लाना) **4** उंग्लियां जुली हुई रपना **5** हाथों को जाड लेना या'नी अक हाथ के अंगूठे की जड को दूसरे हाथ के अंगूठे की जड पर मारना मगर येह अहतियात रहे के ताली की आवाज पैदा न हो **6** पडले मुंड इरे हाथों का मस्ह करना **7** दोनों का मस्ह पै दरे पै होना **8** पडले सीधे इरे उलटे हाथ का मस्ह करना **9** दाढी का बिलाल करना **10** उंग्लियों का बिलाल करना जबके गुबार पड़ोय गया हो. अगर गुबार न पड़ोया हो म-सलन पथ्थर वगैरा किसी ऐसी चीज पर हाथ मारा जिस पर गुबार न हो तो बिलाल इर्ज है बिलाल के लिये दोबारा जमीन पर हाथ मारना जरूरी नहीं.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 356)

**इस्मा'ले गुस्ल** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : जिस ने मुज पर अक बार दुरेद पाक पढा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है. (स्म)

## तयम्मूम का तरीका (उ-नई)

तयम्मूम की निच्यत कीजिये (निच्यत दिल् के धरादे का नाम है, जभान से भी कड लें तो बेहतर है. म-सलन यूं कडिये : बे वुजूध या बे गुस्ली या दोनों से पाकी हासिल करने और नमाज ज़रूज होने के लिये तयम्मूम करता हूँ) बिस्मिल्लाह पढ कर दोनों हाथों की उंग्लियां कुशादा कर के किसी ऐसी पाक चीज पर जो जमीन की किस्म (म-सलन पथ्थर, यूना, ईट, दीवार, मिट्टी वगैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाईये और पीछे लाईये). और अगर जियादा गर्द लग जाये तो जाड लीजिये और उस से सारे मुंह का इस तरह मस्ह कीजिये के कोई हिस्सा रह न जाये अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मूम न होगा. फिर दूसरी बार इसी तरह हाथ जमीन पर मार कर दोनों<sup>2</sup> हाथों का नापुनों से ले कर कोहनियों समेत मस्ह कीजिये, इस का बेहतर तरीका येह है के उलटे हाथ के अंगूठे के धलावा चार<sup>4</sup> उंग्लियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंग्लियों के सिरों से कोहनियों तक ले जाईये और फिर वहां से उलटे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुअे गिट्टे तक लाईये और उलटे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह कीजिये. इसी तरह सीधे हाथ से उलटे हाथ का मस्ह कीजिये. और अगर अक दम पूरी हथेली और उंग्लियों से मस्ह कर लिया तब भी तयम्मूम हो गया याहे कोहनी से उंग्लियों की तरफ लाये या उंग्लियों से कोहनी की तरफ ले गये मगर सुन्नत के खिलाफ हुवा. तयम्मूम में सर और पाँउं का मस्ह नहीं है.

(मुलफ्फस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 353, 354, 356 वगैरा)



**इरमाने गुस्लहा** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غُيُورٌ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ग्रान)

## “मेरे आं ता हम्शव की पखीशवीं शरीह” के पखीस हुइक की निरुधत से तयम्मुम के 25 म-दनी इल

\* जो यीज आग से जल कर राप्न होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह जमीन की जिन्स (या'नी डिस्म) से है उस से तयम्मुम जाईज है. रैता, यूना, सुरमा, गन्धक, पथ्थर (मार्बल), जभर जद, डीरोजा, अकीक वगैरा जवालिर से तयम्मुम जाईज है याहे उन पर गुबार हो या न हो. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 357, البحر الزائق ج 1 ص 207)

\* पकड़ी ईंट, यीनी या मिट्टी के भरतन से तयम्मुम जाईज है. लां अगर उन पर किसी यीज का जिर्म (या'नी जिस्म या तेह) हो जो जिन्से जमीन से नहीं म-सलन कांय का जिर्म हो तो तयम्मुम जाईज नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 358) उमूमन यीनी के भरतन पर कांय की तेह यढी होती है ईस से तयम्मुम नहीं हो सकता.

\* जिस मिट्टी, पथ्थर वगैरा से तयम्मुम किया जाये उस का पाक होना जरूरी है या'नी न उस पर किसी नजासत का असर हो न येह हो के सिई फुश्क होने से नजासत का असर जाता रहा हो. (अैजन, स. 357) जमीन, दीवार और वोह गर्द जो जमीन पर पडी रहती है अगर नापाक हो जाये फिर धूप या हवा से सूष जाये और नजासत का असर भत्म हो जाये तो पाक है और उस पर नमाज जाईज है मगर उस से तयम्मुम नहीं हो सकता.

\* येह वड्म के कत्मी नजिस हुई होगी कुजूल है ईस का अे'तिबार नहीं. (अैजन, स. 357)

\* अगर किसी लकड़ी, कपडे, या दरी वगैरा पर ईतनी गर्द है के हाथ मारने से उंग्लियों का निशान बन जाये तो उस से तयम्मुम

**इरमाँ गुस्लका** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस क पास मेरा जिक्र हुवा और उस न मुज पर हुइइ पाक न पढा तइकीक वोड बढ अप्त हो गया. (अः)

जाँज है.

(अःन, स. 359)

\* यूना, मिट्टी या धँटों की दीवार प्वाह घर की हो या मस्जिद की उस से तयम्मुम जाँज है. मगर उस पर ओँल पेन्ट, प्लास्टिक पेन्ट और मेट इनिश या वोड पेपर वगैरा कोँ ऐसी चीज नहीं होनी चाहिये जो जिन्से जमीन के धलावा हो, दीवार पर मार्बल हो तो कोँ हरज नहीं.

\* जिस का वुजू न हो या नहाने की हाजत हो और पानी पर कुदरत न हो वोड वुजू और गुस्ल की जगह तयम्मुम करे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 346)

\* ऐसी बीमारी के वुजू या गुस्ल से उस के बढ जाने या देर में अख्ण होने का सहीह अन्देशा हो या फुद अपना तजरिबा हो के जब भी वुजू या गुस्ल किया बीमारी बढ गँ या यूँ के कोँ मुसल्मान अख्ण काबिल तबीब जो आहिरी तौर पर इंसिक न हो वोड कइ दे के पानी नुक्सान करेगा. तो इन सूरतों में तयम्मुम कर सकते हैं.

(अःन ६६२:६६१ ص ۱ دَرْمُخْتَارُ وَرَدُّ الْمُخْتَارِ ج ۱)

\* अगर सर से नहाने में पानी नुक्सान करता हो तो गले से नहाओं और पूरे सर का मसह करें. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 347)

\* जहाँ यारों तरफ़ अक अक मील तक पानी का पता न हो वहाँ भी तयम्मुम कर सकते हैं.

(अःन)

\* अगर धतना आबे जमजम शरीफ़ पास है जो वुजू के लिये काई है तो तयम्मुम जाँज नहीं.

(अःन)

\* धतनी सर्दी हो के नहाने से भर जाने या बीमार हो जाने का कवी अन्देशा है और नहाने के बा'द सर्दी से बचने का कोँ सामान भी न

**इरमाबे गुस्लका** عَنِ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा सुब्द और दस भरतभा शाम दुरुदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (सुब्द)

हो तो **तयम्मुम** जाईज है. (अैज्जन्, स. 348)

\* **कैदी** को कैदखाने वाले वुजू न करने दें तो **तयम्मुम** कर के नमाज पढ ले बा'द में ईआदा करे और अगर वोह दुश्मन या कैदखाने वाले नमाज भी न पढने दें तो ईशारे से पढे और बा'द में ईआदा करे. (अैज्जन्, स. 349)

\* अगर येह गुमान है के पानी तलाश करने में काङ्किला नजरों से गाईब हो जायेगा तो **तयम्मुम** जाईज है. (अैज्जन्, स. 350)

\* **मस्जिद** में सो रहा था के गुस्ल ईर्ज हो गया तो जहां था वहीँ इरैन **तयम्मुम** कर ले येही अडवत (या'नी अेहतियात के जियादा करीब) है. (माफूज अज इतावा र-जविय्या मुभर्रज्ज, जि. 3, स. 479) इर बाहर निकल आये ताभीर करना हराम है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 352)

\* **वक्त** ईतना तंग हो गया के वुजू या गुस्ल करेगा तो नमाज कजा हो जायेगी तो **तयम्मुम** कर के नमाज पढ ले इर वुजू या गुस्ल कर के नमाज का ईआदा करना लाजिम है.

(माफूज अज इतावा र-जविय्या मुभर्रज्ज, जि. 3, स. 307)

\* **औरत** हैज व निफ़ास से पाक हो गई और पानी पर कादिर नहीं तो **तयम्मुम** करे. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 352)

\* अगर कोई ऐसी जगह है जहां न पानी मिलता है न ही **तयम्मुम** के लिये पाक मिट्टी तो उसे याहिये के वक्ते नमाज में नमाज की सी सूरत बनाये या'नी तमाम ह-रकाते नमाज बिला निख्यते नमाज बजा लाये. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 353) मगर पाक पानी या मिट्टी पर कादिर होने पर वुजू या तयम्मुम कर के नमाज पढनी होगी.

\* **वुजू** और गुस्ल दोनों के **तयम्मुम** का अेक ही तरीका है. (जुवहेरह स. 28)

**इरमाने गुस्लका** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दूरे शरीक न पढ़ा उस ने जफा की. (عمرार بن)

\* जिस पर गुस्ल फर्ज है उस के लिये ये ल ज़रूरी नहीं के पुजू और गुस्ल दोनों<sup>2</sup> के के लिये दो<sup>2</sup> तयम्मुम करे बल्के अक ही में दोनों<sup>2</sup> की निखत कर ले दोनों<sup>2</sup> हो जाअंगे और अगर सिर्फ गुस्ल या पुजू की निखत की जब भी काफ़ी है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 354)

\* जिन चीजों से पुजू टूट जाता है या गुस्ल फर्ज हो जाता है उन से तयम्मुम भी टूट जाता है और पानी पर कादिर होने से भी तयम्मुम टूट जाता है. (अैज्जन्, स. 360)

\* औरत ने अगर नाक में झूल वगैरा पहने हों तो निकाल ले वरना झूल की जगह मसूह नहीं हो सकेगा. (अैज्जन्, स. 355)

\* छोटों का वोह डिस्सा जो आ-दतन मुंह बन्द होने की हालत में टिपाई देता है इस पर मसूह होना ज़रूरी है अगर मुंह पर हाथ फ़ैरते वक्त किसी ने छोटों को जोर से दबा लिया के कुछ डिस्सा मसूह होने से रह गया तो तयम्मुम नहीं होगा. इसी तरह जोर से आंभें बन्द कर लीं जब भी न होगा. (अैज्जन्)

\* अंगूठी, घडी वगैरा पहने हों तो उतार कर उन के नीचे हाथ फ़ैरना फर्ज है. इस्लामी बहनें भी यूडियां वगैरा हटा कर उन के नीचे मसूह करें. तयम्मुम की अेहतियातें पुजू से बढ कर हैं. (अैज्जन्)

\* बीमार या बे दस्तो पा झुट तयम्मुम नहीं कर सकता तो कोई दूसरा करवा दे इस में तयम्मुम करवाने वाले की निखत का अे'तिबार नहीं, जिस को तयम्मुम करवाया जा रहा है उस को निखत करनी होगी. (अैज्जन्, स. 354 ۲۶ ص ۱ عالمگیری ج ۱)

**म-दनी मश्वरा:** पुजू के अहकाम सीपने के लिये मक-त-अतुल मदीना

**فرمانہ گورسل** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جیٰ مُؤْمِنٌ پَر رُؤُوسِ جُؤْمُؤَا دُؤُؤِدِ شَرِئِكَ پَدَغَا مَ كِيَا مَت كَ دِنِ اِئْسِ كِي شَكَا اَت كَرُؤُؤَا. (كُرْ اَعْرَابِ)

کا مٹبھوآ “وؤؤؤ کا तरीکا” اور نماؤ سہپنے کے لئیه ریسالہ “نماؤ کا तरीکا” کا مٹا-لہآ مؤفہد ہے۔

ہا رہہ مؤسٹفہ ! ہمے ہار ہار گورسل کے مسالئل پڈنے، سمآنے اور دوسروں کو سمآنے اور سؤننٹ کے مٹابیک گورسل کرنے کی توفیک اٹا فرما۔ اٰمِیْنِ بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ .

ٹالہہ گم مہنا و  
ہکیآ و مرفیرٹ و  
ہہ لہساہ جننٹول فرہوس  
مے آکا کا پؤوس



4 رہیؤل گؤس سئ. 1432 لئ.

### بہہ ریسالہ پڈ کر دھارے ہئ دے ہئہہ

شاہی گمی کی ٹکریہاٹ، ہجٹہماآاٹ، آ'راس اور جؤوسہ مہلاد ہؤرہ مے مکنٹ-ہٹول مہنا کے شاآہہ کڈا رسالئل اور م-ہنی کؤلوں پر مؤشٹمئل پمفلٹ ٹکسہم کر کے سواہ کمارہہ، گالڈکوں کو ہ نئہٹے سواہ ٹولڈکے مے دےنے کے لئیه اپنی دؤکانوں پر ٹہ رسالئل رپنے کا ما'مؤل ہناہہہ، آہہار فروشوں یا ہٹوں کے آریآہہ اپنے مڈلے کے ڈر ڈر مے ماڈانا کم آؤ کم آہہ آہہ سؤننٹوں ہرا ریسالہ یا م-ہنی کؤلوں کا پمفلٹ پڈوںہا کر نہکی کی دہ'وٹ کی ڈومے مٹاہہہ اور ہؤل سواہ کمارہہہ۔

### ماخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	دار احیاء التراث العربی بیروت	سنن ابوداؤد
دار المعرفہ بیروت	در مختار و رد المحتار	دارالکتب العلمیہ بیروت	مسند ابویعلیٰ
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	باب المدینہ کراچی	جوہرہ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	باب المدینہ کراچی	ماہیہ الطوطوی
انتشارات تحفہ تہران	کیسے سعادت	کونٹہ	التحریرات